प्रत्येक कार्य का एक समय

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2024

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं। आर्थिक साझेदारी

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons | **पुस्तकें:** apcwo.org/books | **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org | **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org | **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org

(Hindi – A Time for Every Purpose)

प्रत्येक कार्य का एक समय

विषयसूची

1. परमेश्वर की दृष्टि के अनुसार समय 1
2. समय को पहचानना और बचाना 8
3. समय और अवसरों को समझना 17
4. अपने जीवन को विवेक से सुव्यवस्थित करना 28
5. समय की पुनर्स्थापना 35

1
परमेश्वर की दृष्टि के अनुसार समय

सभोपदेशक 3:1-8

1 हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है।
2 जन्म का समय, और मरण का भी समय; बोने का समय; और बोए हुए को उखाड़ने का भी समय है;
3 घात करने का समय, और चंगा करने का भी समय; ढा देने का समय, और बनाने का भी समय है;
4 रोने का समय, और हँसने का भी समय; छाती पीटने का समय, और नाचने का भी समय है;
5 पत्थर फेंकने का समय, और पत्थर बटोरने का भी समय; गले लगाने का समय, और गले लगाने से रुकने का भी समय है;
6 ढूँढ़ने का समय, और खो देने का भी समय; बचा रखने का समय, और फेंक देने का भी समय है;
7 फाड़ने का समय, और सीने का भी समय; चुप रहने का समय, और बोलने का भी समय है;
8 प्रेम करने का समय, और बैर करने का भी समय; लड़ाई का समय, और मेल का भी समय है।

सभोपदेशक 3:11

उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि वे अपने-अपने समय पर सुन्दर होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादि–अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तो भी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य समझ नहीं सकता।

दानिय्येल 2:21

समयों और ऋतुओं को वही पलटता है;
राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है;
बुद्धिमानों को बुद्धि और समझ वालों को समझ भी वही देता है;

"कितना बजा है या क्या समय हो रहा है?" यह बार-बार दोहराया जाने वाला एक प्रश्न है जिससे हम सब परिचित हैं। वर्तमान में तेज गति से दौड़ते हुए संसार मे लोग घड़ी की सुई के जैसे दौड़ते दिखाई देते हैं। वास्तव में, हम में से अधिकांश लोग जीवन को घड़ी की सुइयों के अनुसार व्यवस्थित करना चाहते हैं। ऐसा लगता है जैसे घड़ी और समय हमारे जीवन पर गहरा नियंत्रण रखते हैं। सही समय पर सही काम करना, सही समय पर सही स्थान पर रहना, सही समय पर सही बात कहना—ये सब बातें हमारे लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण अर्थ रखती हैं। साथ ही, समय "बचाने" के मार्गों और साधनों को ढूँढने के प्रयास भी किये जा रहे हैं।

क्या आपने रुक कर कभी इस सच्चाई पर विचार किया है कि परमेश्वर के पास एक घड़ी है जो संसार की आधारशिला रखने के समय से या फिर अनंतकाल के अज्ञात समय से अब तक चल रही है? क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर के पास हम सभी के जीवन के लिए एक घड़ी है? क्या आपने कभी अपने जीवन को न केवल अपनी कलाई पर पहनी हुई घड़ी के अनुसार या दीवार पर लगी हुई घड़ी के अनुसार, या परमेश्वर की घड़ी के अनुसार ढालना चाहा है या ढालनें का प्रयास किया है? आपके लिए यह कितना महत्वपूर्ण है कि आप परमेश्वर के समय के अनुसार काम करें और आप वही करें जो वह चाहते हैं चाहें वह आप जीवन के किसी भी समय पर करें? और यह आपके लिए कितना महत्वपूर्ण है कि आप अपने जीवन के निश्चित किये गए समय में वही बनें जो वह चाहते हैं?

ये चुनौतीपूर्ण प्रश्न हैं, और वास्तव में यह महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर की घड़ी के अनुसार अपने जीवन को जानना और व्यवस्थित करना सीखें। यह पुस्तक व्यक्तिगत रूप से हमारे लिए परमेश्वर के समय को पहचानने में और समझने में सहायता करेगी।

परमेश्वर की घड़ी

प्रेरितों के काम 1:6,7
6 अत: उन्होंने इकट्ठे होकर उससे पूछा, "हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल का राज्य फेर देगा?"
7 उसने उनसे कहा, "उन समयों (ग्रिक *कोरोनस*) या कालों (ग्रिक *कायरोस*) को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं।

परमेश्वर के पास एक समय सारिणी, एक विशेष क्रम और समय है, जिसमें वह उन कार्यक्रमों को प्रकट करते हैं जिसकी योजना उन्होंने बनाई है। वह अपने समय के अनुसार कार्य करते हैं। वह बोलते हैं और फिर अपने वचन को अपने समय पर पूर्ण करते हैं। परमेश्वर जो वचन कहते हैं *"वे अपने समय पर पूरे होंगे"* (लूका 1:20)। ऐसी बातें हैं जो परमेश्वर ने कही हैं जो *"अंतिम समय के लिये बंद हैं और इन पर मुहर दी हुई है"* (दानिय्येल 12:9)। परमेश्वर की "घड़ी" में इसे "समय की परिपूर्णता" या "सही समय" कहा जाता है। यह सबसे उचित, योग्य और सही समय को संदर्भित करता है—वह समय जब परिपक्व होता है—बिल्कुल सही समय होता है। उदाहरण के लिए, यद्यपि अदन की वाचा—जो उद्धारक के आने का वादा करती है—उत्पत्ति के तीसरे अध्याय में दी गई थी, किन्तु हजारों वर्षों बाद यीशु ने इतिहास में कदम रखा। यहाँ इतनी लंबी प्रतिक्षा क्यों करनी पड़ी? बाईबल बताती है, *"जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा"* (गलातियों 4:4)। *'कैरोस'* क्षण में—इतिहास के सबसे उपयुक्त समय में, सही समय में—प्रभु यीशु ने इस संसार में प्रवेश किया। परमेश्वर का अनंत उद्देश्य भी इसी प्रकार पूरा होगा। *"उस ने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था, कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबंध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे"* (इफीसियों 1:9,10)। परमेश्वर ने *"क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय*

करेगा" (प्रेरितों के काम 17:31)।

अतः, हम देखते हैं कि परमेश्वर के पास एक समय-सारिणी है जिसमें वह अपनी संप्रभुता में जो कुछ उसने पूर्वनिर्धारित किया है उसे पूरा करने के लिए कार्यकर्मों के दौरान हस्तक्षेप करता है। घटनाओं के दौरान हस्तक्षेप करता है, ताकि वह अपनी संप्रभुता में वह पूरा कर सके जिसे उसने पहले से निर्धारित किया है। पृथ्वी से उसके (स्वर्गारोहण) से बिल्कुल पहले, शिष्यों ने उस समय के बारे में प्रभु से पूछा, कि इस्राएल को कब पुनः सत्ता प्राप्त होगी और वह रोमन साम्राज्य से मुक्त किया जाएगा (प्रेरितों के काम 1:6,7)। परमेश्वर का उत्तर हमें सिखाता है कि समय और अवसर पिता के स्वयं के अधिकार में होते हैं। यीशु ने *'क्रोनोस'* और *'कैरोस'* के बारे में बताया है। ग्रीक शब्द, *'क्रोनोस'* समय की अवधि, समय सीमा या समय की मात्रा को बताता है, और *'कैरोस'* समय की विशेषता और प्रकार को दर्शाता है। *'क्रोनोस'* का उपयोग समय के माप, समय की अवधि के रूप में किया जाता है। *'कैरोस'* का उपयोग विशेष घटनाओं, उपयुक्त क्षणों, महत्वपूर्ण घटनाओं और समय में परिवर्तन के संदर्भ में किया जाता है। यह "समय की परिपूर्णता" को दर्शाता है कि—वर्तमान समय किस कार्यक्रम के लिए सबसे उचित है।

कुछ ऐसे समय और अवसर होते हैं जिन्हे पिता ने गुप्त और "अपने अधिकार में" रखने के लिए चुना है। बाईबल हमें सिखाती है कि, *"गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश में रहेंगी"* (व्यवस्थाविवरण 29:29)। दूसरे आगमन और युग के अंत के विषय में, यीशु ने कहा, *"उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता। देखो, जागते और प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा"* (मरकुस 13:32,33) । किन्तु इसका मतलब यह नहीं कि हम उन *'क्रोनोस'*

और *'कैरोस'* को नहीं जान सकते जिन्हें परमेश्वर प्रकट करना चाहते हैं। पूरे पवित्रशास्त्र में, हम देख सकते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों से अपेक्षा करता है कि वे उन समयों और अवसरों को जानें, जिनमें वे एक व्यक्ति के रूप में और समुदाय के रूप में रहते हैं। परमेश्वर अपने लोगों से अपेक्षा करते हैं कि वे उन समयों को जानें जो उनकी घड़ी में है।

बाईबल में "समय"

समय के बारे में बाईबल के दृष्टिकोण के आधार पर अपने नोट में (मर्सर डिक्शनरी ऑफ द बाईबल, 1990), साइमन जे. डेवरीज कहते हैं, *"समय की हिब्रू धारणा के बारे में जो सबसे ज्यादा मायने रखता है वह यह है कि वे प्रत्येक नए दिन को अन्य सभी दिनों से गुणात्मक रूप से अलग होने की उम्मीद करते थे, संभवतः एक अद्वितीय, न दोहराए जाने वाली घटना का निर्माण करते थे जिसमें परमेश्वर दिव्य आत्म को कुछ विशेष और निर्णायक तरीके से प्रकट कर सकते हैं। इसलिए बाईबल ने उन दिनों को सबसे खास घटना के संदर्भ में बताने का एक खास तरीका विकसित किया।"* वह आगे कहता है कि बाईबल के लोग *"मानते थे कि उनका परमेश्वर उनसे कहीं भी और किसी भी समय मिल सकता है; सारा स्थान और सारा इतिहास परमेश्वर का अधिकार क्षेत्र है। इसलिए, बाईबल में उद्देश्य और प्रगती, एक लक्ष्य, एक प्रक्रिया, एक नियति की भावना है।"*

बाईबल में "समय" एक महत्वपूर्ण तत्व या घटक है जहाँ विभिन्न प्रकार के समय—विभिन्न *'कैरोस'* क्षणों के बारे में बताया गया है। भजन संहिता एक ऐसे समय के बारे में चर्चा करता है, जब परमेश्वर मिल सकता है (भजन संहिता 32:6), एक बुरा समय (भजन संहिता 37:18,19), परेशानी का समय (भजन संहिता 41:1) और योग्य समय में स्वीकार करना (भजन संहिता 69:13; 2 कुरिन्थियों 6:2)। नए नियम

में, हम देखते है कि परमेश्वर स्वयं अपनी सीमाओं को निर्धारित करने के अतिरिक्त राष्ट्रों के उत्थान और पतन के लिए भी समय निर्धारित करते हैं (प्रेरितों के काम 17:26,27)। एक ऐसी अवधि जिसमें हम रहते हैं, उन्हें *"बीता समय"* (1 तीमुथियुस 4:1) और *"अन्तिम दिनों"* (2 तीमुथियुस 3:1) जैसे शब्दों द्वारा बताया जाता है। *"समय और अवसर या काल"* (1 थिस्सलुनीकियों 5:1), *"ये अंतिम समय"* (1 पतरस 1:20), *"विभिन्न समय," "बीता हुआ समय"* (इब्रानियों 1:1) और *"आवश्यकता का समय"* (इब्रानियों 4:16) जैसे वाक्यांश भी होते हैं। इसलिए, "समय" पर बाईबल के दृष्टिकोण को समझना, सफल मसीही जीवन का एक अभिन्न अंग है।

'कैरोस' को समझना

'कैरोस' साधारणतः नियुक्त किया गया, उपयुक्त समय या सही समय है। सामान्यतौर पर कहा जा सकता है कि, *'कैरोस'* कैलेंडर वर्षों की संख्या से जुड़ा नहीं होता। यदि परमेश्वर ने विशेष रूप से समय की एक विशेष अवधि के बारे में कुछ नहीं कहा है तो *'कैरोस'* का क्षण कुछ, निश्चित स्थितियों, परिस्थितियों, लोगों, चीजों, इत्यादि के एक साथ आने पर निर्भर है—जो की परमेश्वर द्वारा कही गई बात को सम्पूर्ण होने के लिए सही समय बनाते हैं।

उदाहरण के लिए, व्यक्तिगत भविष्यवाणी की पूर्ति *'कैरोस'* क्षण में होती है। यदि किसी व्यक्ति को व्यवसाय में सफल होने की भविष्यवाणी मिलती है, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि उसकी सफलता रातोंरात हो जाएगी। इस भविष्यवाणी की पूर्ति तब होगी जब परमेश्वर द्वारा चाही गई कुछ विशेष स्थितियाँ इस व्यक्ति के जीवन में एक साथ आ जाएँगी। यदि भविष्यवाणी पाने वाला व्यक्ति एक युवा व्यक्ति है, तो संभवत: परमेश्वर इस व्यक्ति से अपेक्षा करेंगे कि वह अपना स्वयं का व्यवसाय आरंभ करने से पहले कुछ प्रशिक्षण और कुछ वर्षों तक

काम करे। उस युवक को अपना व्यवसाय शुरू करने के बाद, एक महान विचार प्राप्त करने में अब भी कई साल लग सकते हैं, जो अंततः उसे बेहद सफल बना सकता है। जबकि भविष्यवाणी का वचन हमेशा से सत्य था, यह केवल तभी पूरा हो सकता है जब ये सभी परिस्थितियाँ पूरी हो जाएँ और *'कैरोस'* का क्षण आ जाए।

2
समय को पहचानना और बचाना

इफिसियों 5:15-17
15 इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो।
16 और अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं।
17 इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है?

कुलुस्सियों 4:5
अवसर को बहुमूल्य समझकर बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से व्यवहार करो।

पवित्रशास्त्र हमें समय (*कैरोस*) समय को बचा कर सदुपयोग करने की सलाह देता है। *"अवसर को बहुमूल्य समझो"* (इफिसियों 5:16) जो कि हमारे जीवन के उपयुक्त क्षणों को पहचानने और उनका लाभ उठाकर सक्षम होने के बारे में बताता है। ऊपर दिये गए पवित्रशास्त्र का यह संदर्भ बताता है कि, यह केवल तब ही संभव है जब हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बुद्धिमानी और सावधानी से चलें। दूसरे शब्दों में, हमारे जीवन के उपयुक्त क्षणों का लाभ उठाने—अतः सही समय पर सही काम करने—के लिए हमारी क्षमता हमारे व्यक्तिगत जीवन के प्रति परमेश्वर की इच्छा के प्रति हमारी समझ पर निर्भर है। परमेश्वर हमारे व्यक्तिगत जीवन के लिए *'क्रोनोस'* और *'कैरोस'* नियुक्त करते हैं। हम में से प्रत्येक के पास जीने के लिए एक *'क्रोनोस'* या समय की अवधि होती है। परमेश्वर ने उसके लोगों से प्रतिज्ञा की है कि, *"मैं तेरी आयु पूरी करूँगा"* (निर्गमन 23:26)। परमेश्वर की सामान्य इच्छा प्रकट करती है कि *"हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं,"* और यह 80 वर्ष तक बढ़ सकती है (भजन संहिता 90:10)। परमेश्वर ने हमें *"दीर्घायु"* से तृप्त करने की प्रतिज्ञा की है

(भजन संहिता 91:16)। सामान्य रूप से, परमेश्वर की सन्तान को *"जैसे पुलियों का ढेर समय पर खलिहान में रखा जाता है, वैसे ही तू पूरी अवस्था का हो कर क़ब्र को पहुंचेगा"* (अय्यूब 5:26)। अधिक विशेष रूप से, परमेश्वर के पास हमारे व्यक्तिगत जीवनों के लिए समय और अवसर होते हैं।

हमारे जीवन के *'कैरोस'* क्षण वह विशिष्ट समय और काल या अवसर हैं, जिन्हें हमें पहचानने और लाभ उठाने की आवश्यकता है। हमें अवसर का लाभ उठाने की आवश्यकता है।

इस समय आपके जीवन में *'कैरोस'* क्या है? आप जीवन के किस काल (समय) में हैं? क्या यह कार्य करने या तैयारी का समय है? क्या यह अध्ययन करने या सीखने का समय है? क्या यह आपके लिए मसीही जीवन के किसी विशेष पहलू के बारे में सीखने का समय है? क्या यह आपके लिए एक निश्चित संबंध बनाने का समय है? क्या यह आपके लिए आराम करने और आने वाले दिनों की योजना बनाने का समय है? क्या यह आपके लिए रुक कर कुछ समय पहले तेजी से हुए आत्मिक विकास के कार्यक्रमों को संगठित करने का समय है? क्या यह आपके लिए किसी विशेष विषय पर शोध करने का समय है? क्या यह आपके लिए सेवा करने या अगुवाई करने का समय है? जब हम जीवन के उस विशिष्ट अवसर को पहचान सकते हैं जिसमें हम इस समय हैं, तो हम इस विशिष्ट उद्देश्य को पूरा करने के लिए अपने समय का लाभ उठाने में सक्षम हो पाएंगे।

जब एक अवसर पर प्रभु यीशु यरूशलेम शहर के पास पहुंचे, तो वह उस नगर को देखकर रोए। यरूशलेम के आगामी विनाश की घोषणा करते हुए, उन्होंने कहा, *"... क्योंकि तू ने वह अवसर जब तुझ पर कृपा दृष्टि की गई न पहिचाना"* (लूका 19:41-44)। परमेश्वर ने यरूशलेम में *"भेंट करने के लिए"* एक नियुक्त समय ठहराया था,

मगर उस नगर के लोग इससे अनजान थे। मेरा मानना है कि परमेश्वर ने हमारे व्यक्तिगत जीवन में विशेष मुलाकात करने के लिए एक निश्चित समय नियुक्त किया हैं। परमेश्वर हमारे जीवन के इन अवसरों के दौरान, हमारे हृदय में विशेष कार्य करते हैं, और उन योजनाओं और उद्देश्यों को विस्तार से उजागर करते हैं, जो उन्होंने हमारे जीवन के लिए रखे हैं, या वह हमें विशेष दिशा देते है, या हमें एक विशेष वरदान देते हैं और इसे जारी रखते हैं। किन्तु, मुलाक़ात के दौरान जो परिणाम होता है, वह अधिकतर हमारी प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है। यदि हम मुलाकात के समय से अनभिज्ञ हैं, तो परमेश्वर को हमें लांघकर चले जाएंगे क्या आप परमेश्वर के प्रति चौकन्ने या सावधान हैं और इस बात के लिए संवेदनशील हैं कि वह वर्तमान में आपके जीवन में क्या प्रकट कर रहे हैं? वह जो कर रहे हैं उसके प्रति आप कैसी प्रतिक्रिया दे रहे हैं?

समय में और कदम में

सभोपदेशक 3:17ब
... क्योंकि उसके यहां एक एक विषय और एक एक काम का समय है।

सभोपदेशक 8:6अ
... क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है,...

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हर उद्देश्य के लिए एक सही समय होता है। यह जानना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर हमसे किसी स्थिति के संबंध में क्या चाहते हैं, परन्तु उतना ही महत्वपूर्ण उस कार्य को सही समय पर करना भी है। कई बार हम प्रभु से एक विचार, योजना, रणनीति या दर्शन प्राप्त करते हैं, और हम इसे तुरंत पूरा होते देखना चाहते हैं या हम इसे तुरंत जाकर पूरा करना चाहते हैं। मैंने बड़ी मुश्किल से सीखा है, कि परमेश्वर के पास न केवल एक योजना

है, बल्कि उनके पास उस योजना को प्रकट करने और पूरा करने के लिए एक विशेष समय भी है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम न केवल उनकी योजनाओं और उद्देश्यों को जानें, बल्कि उन्हें पूरा करने के लिए उनके समय को भी समझें। हमें परमेश्वर के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की जरूरत है—न तो आगे और न ही पीछे।

राजा दाऊद के जीवन की दो घटनाएँ हमें स्पष्ट करती हैं जिसकी चर्चा हम यहाँ पर कर रहे हैं। परमेश्वर ने दाऊद को पूरे इस्राएल का राजा नियुक्त किया था। जब दाऊद एक छोटा लड़का था, तब भविष्यवक्ता शमूएल ने उसका अभिषेक किया था—तेल से अभिषेक इस सत्य का प्रतिनिधित्व करता है कि परमेश्वर ने दाऊद को राजा बनने के लिए चुना था। दाऊद के गोलियात पर विजय प्राप्त करने और एक राष्ट्र का अगुवा बनने के बाद, उसे अपने जीवन की रक्षा के लिए राजा शाऊल से भागना पड़ा। दाऊद का जंगली जानवर की तरह शिकार किया गया; वह गुफाओं में अपना निवास बनाने वाले घुमक्कड़ की तरह रहता था। वर्षों बीत चुके थे किन्तु दाऊद इस पूरे समय में अपने परमेश्वर के प्रति ईमानदार बना रहा। आखिरकार, राजा शाऊल एक युद्ध में मारा गया। जब दाऊद ने यह सुना, तो वह शाऊल और उसके घराने के लिए शोक से भर गया। इसके बाद, *"... दाऊद ने यहोवा से पूछा, कि "क्या मैं यहूदा के किसी नगर में जाऊं?" यहोवा ने उस से कहा, "हां, जा।" दाऊद ने फिर पूछा, "किस नगर में जाऊं?" उसने कहा, "हेब्रोन में।" तब दाऊद वहाँ गया। और यहूदी लोग आए, और वहां दाऊद का अभिषेक किया कि वह यहूदा के घराने का राजा हो।"* (2 शमूएल 2:1-4)।

सही समय पर सही कदम उठाने से दाऊद यहूदा के राजा के रूप में पहचाना जाने लगा। कुछ ही समय में उसे इस्राएल का राजा मान लिया गया। हम देखते हैं कि दाऊद एक ऐसा व्यक्ति था जो परमेश्वर के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहता था। हालाँकि

उसे राजा बनने के लिए नियुक्त किया गया था, लेकिन उसने वहाँ पहुँचने के लिए उतावली या जल्दबाजी नहीं की। उसने परमेश्वर को अपने समय में अपनी योजनाओं को प्रकट करने की अनुमति दी। साथ ही, दाऊद ने परमेश्वर के साथ एक समय पर एक कदम उठाने के महत्व को सीखा। ध्यान देने योग्य है कि हेब्रोन की ओर कदम बढ़ाने में वह कितना सावधान था। और जब उसने सही समय पर सही कदम उठाया, तब सारी बातें उसके पक्ष में होने लगीं। सही समय पर सही कदम उठाने से आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों की पूर्ति देख पाएंगे।

दाऊद के जीवन की दूसरी घटना दुर्भाग्यपूर्ण है, क्योंकि यह प्रकट करती है कि दाऊद परमेश्वर के साथ सही समय पर सही कदम उठाने में कैसे विफल रहा और समय की इस चूक के गंभीर परिणाम क्या थे।

2 शमूएल 11:1,2

1 फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं, उस समय, अर्थात वर्ष के आरम्भ में दाऊद ने योआब को, और उसके संग अपने सेवकों और समस्त इस्राएलियों को भेजा; और उन्होंने अम्मोनियों को नाश किया, और रब्बा नगर को घेर लिया। परन्तु दाऊद यरूशलेम में रह गया।
2 सांझ के समय दाऊद पलंग पर से उठ कर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक स्त्री, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी।

यह वर्ष का वह समय था जब राजा अपने सेवकों के साथ युद्ध करने जाते थे। यद्यपि, दाऊद ने अपने सेवकों को युद्ध में भेजने का निर्णय लिया, जबकि वह अपने महल में ही रहा। वह गलत समय पर गलत स्थान पर था। उसने सुंदर बतशेबा को देखा और उसके साथ व्यभिचार किया। इस कृत्य से उसे बहुत पीड़ा और दुःख हुआ। इस विफलता का कारण इस साधारण सत्य पर आधारित है कि दाऊद ने अपने सेवकों के साथ युद्ध में जाने का निर्णय नहीं लिया जबकि उसे

जाना चाहिए था। उसने एक ऐसा निर्णय लिया जिसने उसे गलत समय पर गलत स्थान पर डाल दिया था।

हमारे प्रभु यीशु ने किस प्रकार अपने जीवन को व्यवस्थित किया था, इसका उल्लेख हम चार सुसमाचारों में देखते हैं और यह भी देखते है कि वह अपने जीवन के लिए पिता के द्वारा निश्चित किए गए समय के प्रति संवेदनशील और पूर्णतः जागरूक थे। यीशु ने अपनी सेवकाई को आरम्भ करने के लिए 30 वर्षों तक प्रतीक्षा क्यों की? क्योंकि वह जानते थे कि उनका समय अब तक नहीं आया है—वह समय जब उनके लिए सेवकाई में प्रवेश करने का था, जिसे पिता ने उनके लिए नियुक्त किया था (यूहन्ना 2:4)। यीशु ने यशायाह 61 से उन शक्तिशाली वचनों को पढ़ने के साथ अपनी सेवकाई शुरू की। भविष्यवाणी के उस संदर्भ को पढ़ने के बाद, यीशु अपने सुनने वालों से कहने लगे कि, *"आज ही यह वचन तुम्हारे सामने पूरा हुआ है"* (लूका 4:21)। यीशु अपनी सेवकाई को आरंभ करने के लिए परमेश्वर के समय से अवगत थे। उनका संदेश भी समय पर था—समय पर एक वचन। उन्होंने पश्चाताप पर प्रचार करते हुए कहा, *"समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो"* (मरकुस 1:15)। वह एक नए युग की शुरुआत की घोषणा कर रहे थे और उनके संदेश ने लोगों का ध्यान उन कामों पर आकर्षित किया जो परमेश्वर उस समय पृथ्वी पर कर रहे थे। वह कुछ ऐसा प्रचार और घोषणा कर रहे थे जो उस समय के लिए प्रासंगिक था। वह उन चीजों के प्रति पूरी तरह से सचेत थे जो पिता कर रहे थे और करने वाले थे—पृथ्वी पर परमेश्वर के वर्तमान और आने वाले कार्यों के बारे में। उन्होंने *"वह समय आ रहा है"* वाक्यांश का उपयोग किया, और ऐसे समय के आरम्भ के बारे में बताया जब लोग आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करेंगे (यूहन्ना 4:21,23), और आगामी पुनरुत्थान के सन्दर्भ में—"मृतकों में से जी उठेंगे" (यूहन्ना 5:25)। एक अन्य स्थान

पर, उन्होंने आने वाले समय के बारे में बात की जब वह अपने शिष्यों से दृष्टांतों में बात नहीं करेंगे, बल्कि पिता के बारे में स्पष्ट रूप से कहेंगे (यूहन्ना 16:25)।

इससे हम देखते हैं कि पृथ्वी पर परमेश्वर के विशिष्ट प्रवाहों, कार्यों या व्यवस्थाओं को लागू करने के लिए एक निश्चित समय है। यीशु अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय के बारे में भी जानते थे—इसने उन्हें आश्चर्यचकित नहीं किया। वह जानते थे कि वह समय आ गया है जब उनके शिष्य तितर-बितर हो जाएंगे और उन्हें छोड़ देंगे (यूहन्ना 16:32) और उन्हें क्रूस पर चढ़ा दिया जाएगा (यूहन्ना 13:1; यूहन्ना 17:1)। वास्तव में, उन्होंने अपने जीवन में इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए भी यह आदेश दिया कि उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने का समय अभी नहीं आया है (यूहन्ना 16:32)। बाईबल यह भी कहती है, *"... किसी ने उस पर हाथ न डाला, क्योंकि उसका समय अब तक न आया था"* (यूहन्ना 7:30; यूहन्ना 8:20)। हमारे स्वामी के जीवन के इस त्वरित अवलोकन से, हम देखते हैं कि उन्होंने पृथ्वी पर अपना जीवन पिता की योजनाओं और समय के प्रति सचेत रहते हुए व्यतीत किया। उनका अनुसरण करना हमारे लिए एक चुनौती है।

हम अपने जीवन को कैसे व्यवस्थित कर रहे हैं? क्या हम अपने पिता और हमारे लिए उनकी योजनाओं के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का प्रयास कर रहे हैं? हम में से कुछ लोगों में परमेश्वर से आगे भागने की आदत होती है। हमें न केवल प्रभु की प्रतीक्षा करने बल्कि प्रभु की प्रतीक्षा करने के गुण को विकसित करने की आवश्यकता है। बाईबल सिखाती है कि परमेश्वर *"उसकी बाट जोहने वाले के लिये कार्य करता है"* (यशायाह 64:4)। मेरी शुरुआती किशोरावस्था में, जब प्रभु ने पहली बार मेरे जीवन के माध्यम से काम करना शुरू किया, तो कई अवसरों पर, मैंने सेवकाई के क्षेत्रों और मार्गों में अपना रास्ता अस्वाभाविक कर दिया। बेशक परमेश्वर दयालु थे क्योंकि वह जानते

थे कि मैं उन चीजों से अनभिज्ञ था जो इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई हैं, और उन्होंने मुझे इसके माध्यम से सीखने में सहायता की। किन्तु उस दौरान मुझे यह देखने का आनंद मिला कि परमेश्वर अलौकिक रूप से पवित्र साहस और पहल को आशीष देते हैं जो प्रदर्शित किये गए थे। इसके परिणाम स्वरूप आरंभ के दिनों से स्थायी फल उत्पन्न हुए। जिन सत्यों पर हम चर्चा कर रहे हैं, उन्हें समझने के बाद, अब परमेश्वर के समय को सीखना एक उत्तरदायित्व बन गया है। जिन बातों को करने के लिए परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहे हैं, चाहें वे हमारे व्यक्तिगत जीवन, सेवकाई, या हमारे व्यवसायों में हों, हमें उनकी योजना और समय दोनों को जानने का प्रयास करना चाहिए। हमें इस बात से अवगत होने की आवश्यकता है कि परमेश्वर के पास प्रशिक्षण और तैयारी के लिए समय है। परमेश्वर अपने "लोगों को" युद्ध के लिए "सेवा काल" प्रशिक्षण प्रदान करता है। कभी-कभी, हम डर के कारण कुछ घटनाओं, स्थानों या अनुभवों से बचना चाहते हैं। हम या तो डरते हैं कि हम कैसी प्रतिक्रिया देंगे या अनहोनी से डरते हैं, किन्तु कभी-कभी, परमेश्वर चाहते हैं कि हम उन परिस्थितियों में आगे बढ़ें, ताकि हम इस प्रक्रिया में जीत सकें, सीख सकें और प्रशिक्षित हो सकें। जीवन में ये स्थितियाँ अनावश्यक मार्ग या अनावश्यक देरी जैसे प्रतीत हो सकती हैं, किन्तु परमेश्वर हमारे लाभ के लिए इन्हें बदल देते हैं।

कई आश्चर्य उन लोगों की प्रतीक्षा करते हैं जो "हठी व्यक्ति के समान" हैं। ये वे लोग हैं जो हिचकिचाते हैं, अतीत को छोड़ने के लिए—जाने पहचाने को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते और परमेश्वर के नये और अपरिचित कार्यों को करने के लिय तैयार नहीं होते हैं, और हमें एवं उन्हे परमेश्वर जो कर रहा है, उसमें कदम रखने के लिए विश्वास और साहस की आवश्यकता है ।

हमें इस बात से अवगत होने की आवश्यकता है कि परमेश्वर आज पृथ्वी पर क्या कर रहे हैं। हम में से जो लोग अगुवाई में हैं, उन

पर लोगों की अगुवाई करने की जिम्मेदारी है जो परमेश्वर के समय के अनुसार हमें सौंपे गए हैं, हमें उन क्षेत्रों और मार्गों पर ले जाने के लिए है जो हमारे लिए तैयार किये गए हैं।

3
समय और अवसरों को समझना

1 इतिहास 12:32क
इस्साकारियों में से जो समय को पहचानते थे, कि इस्राएल को क्या करना उचित है,...

ऊपर दिया गया वचन उन विशेष लोगों के बारे में बताता है, जिन्हें समय की समझ थी। वे *'कैरोस'* क्षणों को जानते थे। वे जानते थे कि उनके समय के लिए कौन सी कार्यवाई सबसे उपयुक्त है। समय और ऋतुओं को समझने से हम यह जान पाएंगे कि हमें क्या करना है। हमारे व्यक्तिगत जीवन में अलग-अलग घटनाएँ होती हैं, जिनके लिए हमें परमेश्वर के समय की तलाश करनी होगी—उदाहरण के लिए, एक सेवकाई की शुरूवात, विवाह, व्यवसाय में परिवर्तन करना, सुसमाचार के लिए रणनीतिक रूप से स्थानांतरण करना, या एक नए व्यवसाय में प्रवेश करना। हम कुछ "ऋतुओं" पर विचार करेंगे जिन्हें विशेष रूप से पवित्रशास्त्र में पहचाना गया है।

परमेश्वर द्वारा नई गतिविधियों का समय

हमने पहले कहा था कि परमेश्वर के कार्यों, गतिविधियों और व्यवस्थाओं को पृथ्वी पर लागू करने का एक निश्चित समय है। परमेश्वर अव्यवस्थित रूप से कार्य नहीं करते। बल्कि, उनके पास पूर्व-नियोजित समय होता है जिसमें वह एक नए कार्य को आरंभ एवं लागू करते हैं जिसे वह पृथ्वी पर पूरा करना चाहते हैं। कई अवसरों पर, यीशु ने इस तथ्य की ओर संकेत किया है जब उन्होंने इस वाक्यांश का उपयोग किया, *"वह समय आता है"* (यूहन्ना 4:21)। यीशु के अनुसार, एक समय आने वाला था जब लोग *"आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करेंगे"*

(यूहन्ना 4:21,23)। हम ऐसे ही समय में जी रहे हैं। इसके अतिरिक्त, इतिहास में परमेश्वर के देहधारी पुत्र के द्वारा शैतान का नाश करने के लिए एक विशेष समय नियुक्त किया गया था। जब यीशु ने जान लिया कि यह पूर्वनियोजित समय आ गया है, तो उन्होंने कहा कि, *"अब इस जगत का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा"* (यूहन्ना 12:31)। हम परमेश्वर की आत्मा के उंडेले जाने के समय में जी रहे हैं, जिसके बारे में योएल 2:28 और प्रेरितों के काम 2:17 दोनों में कहा गया है, *"परमेश्वर की यह वाणी है, कि उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उंडेलूंगा।"* सभी प्राणियों पर परमेश्वर के आत्मा का उंडेला जाना परमेश्वर के कैलेंडर की उस अवधि में परमेश्वर के कार्य के लिए आरक्षित और इसकी विशेषता है जिसे "अंतिम दिन" कहा जाता है—ऐसे दिन जिनमें हम रह रहे हैं।

ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन्हें हमें पृथ्वी पर परमेश्वर की गतिविधियों या कार्यों के बारे में समझना है।

किसी भी अवधि में पृथ्वी पर पवित्र आत्मा का एक से अधिक "कार्य" जारी हो सकता है

उदाहरण के लिए, जिस समय में हम रह रहे हैं, वह न केवल आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करने का समय है, बल्कि आत्मा के उंडेले जाने का भी समय है। यह आवश्यक है कि हम इसे जानें। बहुत से लोग इस सत्य से अनभिज्ञ हैं अतः उन्होंने अपने आप को परमेश्वर के विभिन्न कार्यों में से सिर्फ एक कार्य तक सीमित कर लिया है जिन्हें परमेश्वर पृथ्वी पर कर रहे हैं। तब वे अपनी सीमित समझ और दृष्टिकोण का प्रतिपादन करते हैं मानों कि केवल यही एक चीज़ थी जिसे परमेश्वर कर रहे हैं और यह स्पष्ट रूप से एक अस्वस्थ रवैया है। एक मसीही के रूप में, हमें उन सभी बातों के प्रति सचेत और खुले रहने की आवश्यकता है जो परमेश्वर कर रहे हैं। हमें उन सभी

के साथ समझौतापूर्ण और सामंजस्य में रहना चाहिए जिन्हें परमेश्वर हमारे जीवन के द्वारा पूरा करना चाहते हैं। परमेश्वर जो कर रहे हैं उसके विभिन्न पहलुओं में से कुछ का उल्लेख करने के लिए—हमने "वचन अभियान" देखा है जहाँ विश्वास, दिव्य उपचार, मुक्ति, समृद्धि, आदि जैसे विषयों पर विस्तार से व्याख्या करने के साथ-साथ परमेश्वर के वचन को सिखाने पर बल दिया गया था। फिर, विश्व मिशन, चर्च की वृद्धि, स्तुती और आराधना, पारिवारिक, सामाजिक / राजनीतिक कार्यवाई, आत्मिक युद्ध, भविष्यवाणी और प्रेरितों पर बल दिया गया है। आप इन बातों के लिए खुलें है और ज्ञात से परे आगे बढ़ते हुए उन विभिन्न कार्यों तक पहुंचे, जो परमेश्वर कर रहे हैं। अपने जीवन में स्वयं को या परमेश्वर के कार्य को सीमित न करें, और उनके प्रति सहनशील बनें जो एक अलग "भाषा" बोलते हैं, क्योंकि वह एक अलग कार्य में सम्मिलित होते हैं जो परमेश्वर कर रहे हैं।

परमेश्वर की प्रत्येक गतिविधि एक विशेष उद्देश्य को पूरा करती है

वर्तमान में पवित्र आत्मा के उंडेले जाने के उद्देश्यों को यीशु ने स्पष्ट रूप से बताया था, *"तुम पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे... "* (प्रेरितों के काम 1:8)। हमें जाँचने और समझने की आवश्यकता है कि परमेश्वर जो कर रहे हैं वह क्यों कर रहे हैं। अन्यथा, आप उसके "तरीके" में तो सम्मिलित हो जाएंगे किन्तु "उद्देश्य" से चूक जाएंगे। इससे हमें परमेश्वर के भावी उद्देश्यों को पूर्ण करने के प्रयासों का मूल्यांकन करने में भी सहायता मिलेगी।

परमेश्वर की प्रत्येक गतिविधि परमेश्वर की दूसरी गतिविधि की समपूरक है

परमेश्वर का विभिन्न कार्य एक-दूसरे के विपरीत नहीं हैं, बल्कि इसके

अलावा हर कार्य दूसरे कार्य से संबंधित होता है जो परमेश्वर कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, पवित्र आत्मा का उंडेला जाना न केवल हमें गवाह बनाता है, बल्कि हमें आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करने में भी सक्षम बनाता है। आत्मा में परमेश्वर की आराधना करना न केवल पिता को प्रसन्न करता है, बल्कि यह शत्रु के विरुद्ध एक शस्त्र भी है और सुसमाचार को आगे बढ़ाने में सहायता करता है। इसलिए, आप एक अलग काम में सम्मिलित लोगों से जुड़ें और सीखें ताकि आपका जीवन समृद्ध हो सके।

परमेश्वर के पिछले कार्य को जारी रखते समय लोगों के लिए गलती करना संभव है

जबकि परमेश्वर की पिछली गतिविधि को जानना महत्वपूर्ण है, हम स्वयं को अतीत में जीने की अनुमति नहीं दे सकते। इस्राएलियों की प्रतिज्ञा किए गए देश की यात्रा पर उदाहरण स्वरूप ध्यान दीजिये जिन्होंने वाचा के देश की यात्रा की थी। कई अवसरों पर, उन्हें हतोत्साहित किया गया था। वे कुड़कुड़ाने लगे और परमेश्वर और मूसा के विरूद्ध शिकायत करने लगे थे। ऐसे ही एक अवसर पर, प्रभु ने उग्र सांपों को शिविरों में प्रवेश करने की अनुमति दी, जिससे कई लोग मारे गए। जब लोगों ने पश्चाताप किया, तो परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया कि वह एक पीतल का साँप बनाए और उसे एक खम्भे पर स्थापित करें ताकि *"हर कोई जिसे डसा गया है, जब वह देखे, तो जीवित रहेगा"* (गिनती 21:1-9)। इसलिए ऐसा ही हुआ। इतिहास में कुछ सौ वर्षों तक आगे बढ़ते हुए, हम देखते हैं कि इस्राएल के लोगों ने इसे आराधना की वस्तु के रूप में उपयोग करते हुए पीतल के साँप के आगे धूप जलाया जिसे मूसा ने बनाया था (2 राजा 18:4)। परमेश्वर ने राजा हिजकिय्याह को इस घातक बुराई को नष्ट करने के लिए खड़ा किया जो परमेश्वर के लोगों के बीच थी। आज ऐसे कई लोग हैं जो परमेश्वर के पिछले कदम की निशानी को मूर्तिपूजक के रूप में कसकर पकड़े हुए हैं। यह त्रुटि

और धोखे की ओर ले जाता है जो परमेश्वर को अप्रसन्न करता है।

परमेश्वर द्वारा की जा रही नई गतिविधि में कदम रखने के लिए तैयार न होना महंगा पड़ सकता है

कई बार, क्योंकि हम एक निश्चित "रीति" के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं जिसमें हमने परमेश्वर को कार्य करते और अपनी उपस्थिति को प्रदर्शित करते हुए देखा है, हम उसी रीति को पकड़े रहते हैं जिसमें परमेश्वर कार्य करते हैं। तब हम उस नई रीति के प्रति खुले रहने में असफल हो जाते हैं जिसमें परमेश्वर वर्तमान में कार्य करने की इच्छा रखते हैं। पुराने नियम के महान अगुवे, मूसा पर विचार करें। एक समय था जब परमेश्वर ने उसे एक चट्टान पर लाठी मारने का निर्देश दिया था, जो उसने किया था, और प्यासे इस्राएलियों की प्यास बुझाने के लिए पानी बह निकला (निर्गमन 17:1-7)। फिर कुछ साल बाद, मूसा को इसी तरह की स्थिति का सामना करना पड़ा जब लोगों को पानी की आवश्यकता थी। यदपि, इस बार परमेश्वर ने उसे अपनी छड़ी से मारने के बदले चट्टान से बात करने का निर्देश दिया। मूसा शिकायत करने वाले इस्राएलियों पर बहुत क्रोधित हो गया और उसने चट्टान से बात करने के बदले उस पर लाठी से प्रहार कर दिया। उसने इसे दो बार मारा (गिनती 20:1-13)। बेशक, पानी बह निकला, लेकिन मूसा को परमेश्वर के प्रति अविश्वास और आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए उत्तरदायी ठहराना पड़ा। ऐसा प्रतीत होता है कि उस क्षण में, मूसा ने वह करने में अधिक सहज महसूस किया होगा जो उसने पहले किया था और मूसा जानता था कि यह काम करेगा। वह चट्टान से बात करने के लिए सहज नहीं था। शायद वह भूल गया था कि चमत्कारों के पीछे उसकी लाठी नहीं बल्कि परमेश्वर थे। मूसा को अपने अविश्वास के लिए गंभीर परिणाम भुगतने पड़े। क्या हम उन नई रीतियों के लिए खुले हैं जिनमें परमेश्वर काम करना चाहते हैं, भले ही परिणाम एक समान हों?

एक दर्शन के पूर्ण होने का समय

हबक्कूक 2:2,3
2 यहोवा ने मुझ से कहा, 'दर्शन की बातें लिख दे; वरन पटियाओं पर साफ साफ लिख दे कि दौड़ते हुए भी वे सहज से पढ़ी जाएं।
3 क्योंकि इस दर्शन की बात नियत समय में पूरी होने वाली है, वरन इसके पूरे होने का समय वेग से आता है; इस में धोखा न होगा। चाहें इस में विलम्ब भी हो, तो भी उसकी बाट जोहते रहना; क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी और उस में देर न होगी।

प्रत्येक वचन जो परमेश्वर आपके हृदय और जीवन में बोलते हैं, उसके सफल होने का एक निश्चित समय होता है। यह प्रक्रिया एक महिला द्वारा बच्चे को जन्म देने की तरह है। गर्भाधान का एक उदाहरण है—परमेश्वर अपने सपने, अपने विचार, अपनी रणनीति और अपनी योजना को आपके हृदय में डालते हैं। फिर विकास का समय आता है जहाँ एक योजना के अनुरूप एक व्यक्ति के रूप में आप और अन्य आवश्यक घटनाएं संरेखित होती हैं। अंत में जन्म का समय आता है—दर्शन एक वास्तविकता बन जाता है। लेकिन हमें यह जानने की जरूरत है कि प्रतीक्षा का एक समय होता है—समय का बीतना-जब दर्शन दिया जाता है उस समय से लेकर इसके वास्तविक रूप से हो जाने तक। इस अवधि के दौरान परमेश्वर हमें दर्शन को पूरा करने के लिए आधार तैयार करने में सक्षम बनाते हैं। हमें अपने काम के बारे में तत्काल परिश्रमी होने की आवश्यकता है और हमें आश्वस्त होना चाहिए कि यह दर्शन पूरा होगा। इस प्रतीक्षा अवधि में परमेश्वर उन सभी चीज़ों को इकट्ठा करते हैं जिसकी आवश्यकता होती है—जैसे लोग, स्थान, चीज़ें—जो हमें दर्शन को पूरा करने में सक्षम बनाती हैं। जब हम तैयार हो जाते हैं और कार्यों को संरेखित कर दिया जाता है, तब *'कैरोस'* क्षण—दर्शन को पूरा करने का समय आता है।

फल का आनंद लेने का समय

भजन संहिता 1:3अ
वह उस वृक्ष के समान है,
जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है।
और अपनी ऋतु में फलता है,

फल अपनी ऋतु में पैदा होता है। इसका तात्पर्य यह है कि एक समय है जिसमें हम अपने श्रम का फल देख सकते हैं और उसका आनंद ले सकते हैं। हम में से कुछ लोग एक विशिष्ट क्षेत्र में लगन से परिश्रम कर सकते हैं जिसके लिए प्रभु ने हमें बुलाया है। अधिकतर हम निराश हो जाते हैं यदि हमें तुरंत फल नहीं मिलता, या फिर जब हमें अपेक्षित समय पर फल नहीं मिलता। जब यह ऋतु न हो तब फल को तलाश करना हतोत्साहित करने वाला हो सकता है। हमें यह समझने की जरूरत है कि फल अपनी ऋतु में पैदा होता है। हमारे परिश्रम के परिणाम के उगने, खिलने, और फल देने के लिए एक निर्धारित समय नियुक्त किया गया है। जब हम परिश्रम करते हैं, तो हमें कटनी के लिए प्रभु की ओर देखना चाहिए, क्योंकि वही हैं जो अपने समय में फसल देते हैं (1 कुरिन्थियों 3:6)।

परीक्षा और प्रलोभन का समय

लूका 4:13
जब शैतान सब परीक्षा कर चुका, तब कुछ समय के लिये उसके पास से चला गया।

इफिसियों 6:13
इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार उठा लो, कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ करके स्थिर रह सको।

ऐसे समय और काल होते हैं जिन्हें शैतान एक विश्वासी के विरूद्ध अपने आक्रमण को आरंभ करने के लिए "उपयुक्त समय" के रूप में देखता है। शैतान उपयुक्त क्षणों में अपने आक्रमण की योजना बनाता है। ऐसे समयों को *"बुरे दिन"* के रूप में भी जाना जाता है (इफिसियों 6:13)। ये ऐसे समय होते हैं जब हम किसी कारण से सबसे कमजोर हो सकते हैं या शत्रु के लिए एक खुला द्वार छोड़ सकते हैं। यीशु ने इसका उल्लेख *"परीक्षा के समय"* के रूप में किया है (लूका 8:13)। इसलिए, हमें सावधान किया गया है कि *"सचेत रहो, जागते रहो"* (1 पतरस 5:8)। हमें यह समझना महत्वपूर्ण है कि हमारे विरूद्ध बुराई के हमले के लिए विशिष्ट समय और ऋतुएं होती हैं। ऐसे समय भी आएंगे जब अन्य अवसरों की तुलना में लड़ाई अधिक कठिन और ज़ोरदार होगी। हालांकि, हम जानते हैं कि हम डटे रह सकते हैं और दुश्मन के हर एक काम को विफल कर सकते हैं। सामन्य तौर पर, तीव्र शैतानी आक्रमण के ऐसे समय यह संकेत देते हैं कि हम अपने जीवन में एक बड़ी जीत और सफलता के कगार पर हैं। साथ ही, जिस ऋतु से अन्य विश्वासी गुजर रहे हैं, उनके प्रति संवेदनशील होने से हम उनके साथ खड़े होने और ऐसे समय में उनका समर्थन करने में भी सक्षम होंगे। परमेश्वर ने *"संकट के समय में"* (भजन संहिता 41:1) और *"बुरे समय में"* (भजन संहिता 37:18,19) में सहायता करने का वादा किया है।

कटनी का समय

प्रेरितों के काम 16:6,7
6 अब जब वे फ्रूगिया और गलातिया के क्षेत्र से होकर गए, तो उन्हें पवित्र आत्मा ने एशिया में वचन का प्रचार सुनाने से मना किया।
7 और उन्होंने मूसिया के निकट पहुंचकर, बितूनिया में जाना चाहा, परन्तु यीशु की आत्मा ने उन्हें जाने न दिया।

हमारे परमेश्वर कटनी के प्रभु हैं। राष्ट्र उसके फसल के खेत हैं।

वह जानते हैं कि उनकी खेत की फसल कब पकती है, क्योंकि उनमें से सभी एक साथ नहीं पकते हैं। हम पौलुस और उसके सहकर्मियों के अनुभवों को जानते हैं जिन्होंने सुसमाचार की घोषणा करने के उद्देश्य से कुछ क्षेत्रों में प्रवेश करने का प्रयास किया, लेकिन पवित्र आत्मा ने उन्हें जाने नहीं दिया। कई कारण हो सकते हैं कि एक निश्चित क्षेत्र सुसमाचार के लिए क्यों तैयार नहीं है। शायद लोग वचन को ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं हैं और इसलिए प्रार्थना और मध्यस्थता के माध्यम से काम किया जाना चाहिए। शायद मजदूर उस क्षेत्र में कार्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए सुसज्जित नहीं हैं या शायद बाद में कदम रखने से अधिक फसल मिल सकती है। चाहें जो भी हो, हमें पवित्र आत्मा की अगुवाई में परमेश्वर के फसल के खेतों में कदम रखते समय संवेदनशील होने की आवश्यकता है, और हमें उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहिए।

परमेश्वर का भवन बनाने का समय

हाग्गै 1:1-4

1 ... यहोवा का वचन हाग्गै भविष्यद्वक्ता के द्वारा पहुँचा...
2 सेनाओं का यहोवा यों कहता है, ये लोग कहते हैं, कि यहोवा का भवन बनाने का समय नहीं आया है।
3 फिर यहोवा का यह वचन हाग्गै भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा,
4 क्या तुम्हारे लिये अपने छत वाले घरों में रहने का समय है, जब कि यह भवन उजाड़ पड़ा है?

हाग्गै 1:8

पहाड़ों पर चढ़ जाओ और लकड़ी ले आओ और इस भवन को बनाओ, ताकि मैं उसको देखकर प्रसन्न हूँगा और महिमा होगी, यहोवा का यही वचन है।

पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के समय को अनदेखा कर दिया और अनुचित कार्यों को करने के दोषी ठहरे। उन्होंने मंदिर के पुनर्निर्माण की उपेक्षा की और अपने घरों के निर्माण

में व्यस्त रहे। इसकी तुलना करते हुए, हम जानते हैं कि हमारे दिनों में, परमेश्वर मन्दिर का निर्माण "ईंटे और गारे" से नहीं अपितु "जीवित पत्थरों" से कर रहे हैं (1 पतरस 2:4)। यह वह कलीसिया है, जिसके बारे में यीशु ने कहा था कि वह इसे बनाएंगे और जिसके लिए उन्होंने दान-सेवकाई नियुक्त की और संतों को बुलाया (इफीसियों 4:7-11)। हम ऐसे समय में हैं जब अधिक से अधिक लोग प्रभु के भवन के निर्माण की आवश्यकता को महसूस करने लगेंगे, न कि अपने स्वयं के अस्थायी घरों के निर्माण की। ऐसा समय आ रहा है जब परमेश्वर अपने लोगों को पुराने दिनों की तरह अपने घरों (अपने स्वयं के व्यक्तिगत विलासिता या निजी मसीही उद्योग) के निर्माण को समाप्त करने के लिए कहेंगे और कलीसिया के निर्माण में निवेश करने के लिए बुलाएंगे। इसका अर्थ यह है कि हमें त्यागपूर्ण जीवन जीने, उदारता से देने और निडर होकर आगे बढ़ने की नई जीवन शैली को अपनाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

मौन वर्ष

गलातियों 1:15-18

15 परन्तु परमेश्वर की, जिस ने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया,
16 जब इच्छा हुई, कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं; तो न मैं ने मांस और लोहू से सलाह ली;
17 और न यरूशलेम को उन के पास गया जो मुझ से पहिले प्रेरित थे, पर तुरन्त अरब को चला गया: और फिर वहां से दमिश्क को लौट आया॥
18 फिर तीन बरस के बाद मैं कैफा से भेंट करने के लिये यरूशलेम को गया, और उसके पास पन्द्रह दिन तक रहा।

गलातियों 2:1

फिर चौदह वर्ष के बाद मैं बरनबास के साथ यरूशलेम को गया और तितुस को भी साथ ले गया।

हम सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में देखते हैं कि परमेश्वर के कई लोगों ने—जिन्हें परमेश्वर ने अगुवे के रूप में नियुक्त किया था—अपनी तैयारी में बहुत से "मौन वर्ष" व्यतीत किये। हम उन वर्षों को "मौन वर्ष" इसीलिए संदर्भित करते हैं, क्योंकि उस अवधि में उनके कार्यों का वर्णन नहीं दिया गया है। उन्हें प्रशिक्षित किया जा रहा था और परमेश्वर ने उन्हें जो बुलाहट दी थी उसके लिए उन्हें तैयार किया जा रहा था। और फिर, मौन वर्षों के अंत में, परमेश्वर ने उन्हें एक प्रमुख सेवकाई में शामिल किया। हम इसे पौलुस के जीवन में स्पष्ट रूप से देखते हैं। उसे बचाया गया और प्रेरित होने के लिए बुलाया गया, किन्तु कई वर्षों के बाद ही वह एक प्रेरित के अभिषेक की पूर्णता में प्रवेश किया। मसीह में आने के बाद, उन्होंने अरब में मौन रहकर कई वर्ष बिताए। शायद 10 साल बाद, उसने अन्ताकिया की कलीसिया में एक शिक्षक के रूप में अपनी सार्वजनिक सेवा शुरू की। लगभग तीन वर्ष बाद, उसे पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरिताई का कार्य शुरू करने के लिए बुलाया गया (प्रेरितों के काम 13:1-3)। हम इसे हमारे प्रभु यीशु के जीवन में भी देखते हैं, जिन्होंने अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरंभ करने से पहले 30 वर्षों तक मौन जीवन व्यतीत किया था। यूसुफ ने लगभग 13 वर्षों तक प्रतीक्षा की, मूसा ने 40 वर्षों तक प्रतीक्षा की, और सूची आगे बढ़ती है। यह अनुभव करना महत्वपूर्ण है कि मौन वर्ष निष्क्रियता की अवधि नहीं हैं, बल्कि तैयारी का समय है जिसमे एक व्यक्ति महत्वपूर्ण बातों को सीखता है और समझता है कि परमेश्वर ने उन्हें क्या करने के लिए बुलाया है। वह तैयारी जिसमें परमेश्वर किसी व्यक्ति को ले जाते हैं, वह उस तैयारी से बिल्कुल भिन्न हो सकती है जिससे होकर कोई दूसरा व्यक्ति गुजरता है। परमेश्वर का "प्रशिक्षण स्कूल" प्रत्येक व्यक्ति के लिए विशिष्ट है। हम में से कई अपने प्रशिक्षण अवधि में हैं। अब हम जो करते हैं वह आगे आने वाले सभी के लिए आधार है। इसलिए काम करने के प्रति ईमानदार रहें, और सबसे अधिक सीखने, प्रशिक्षित होने और तैयार होने में।

4
अपने जीवन को विवेक से सुव्यवस्थित करना

सभोपदेशक 8:5,6
5 ... और बुद्धिमान व्यक्ति का मन समय और न्याय दोनों को समझता है,
6 क्योंकि हर एक बात का एक समय और न्याय होता है।

लूका 12:54-56
54 फिर उस ने भीड़ से कहा, जब कभी बादल को पच्छिम से उठता देखे, तो तुरन्त कहना, वर्षा होने वाली है; और इसलिए यह है।
55 और जब तुम दक्षिणी हवा को बहते देखते हो, तो कहते हो, 'गर्म मौसम होगा'; और वहाँ है।
56 हे कपटियों! तू आकाश और पृथ्वी के मुख को समझ सकता है, परन्तु यह कैसे है कि तुम लोग इस बार नहीं समझते हो?

एक बुद्धिमान व्यक्ति किसी भी कार्य के लिए सही समय और सही रीति दोनों को पहचानने की क्षमता रखता है। प्रत्येक गतिविधि और कार्य के लिए—सेवकाई का आरंभ, विवाह, व व्यवसाय परिवर्तन, सुसमाचार के लिए स्थानांतरित होना, या एक नए व्यवसाय में प्रवेश करना—एक सही समय और कार्यवाही का सही तरीका है (सही काम करना)। परमेश्वर ने हमें बुद्धिमान लोग होने के लिए बुलाया है—ऐसे लोग जो समय और निर्णय दोनों को समझने में सक्षम होंगे।

हमारे जीवन के समय और ऋतु को पहचानना (व्यक्तिगत या सामुहिक रूप से) इसके साथ उचित कार्यवाही करने का उत्तरदायित्व लाता है। पॉलुस ने लिखा है, *"समय को पहिचान कर ऐसा ही करो, इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, ... रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर*

है। इसलिये हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें। जैसा दिन को सोहता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें..." (रोमियों 13:11-13)। चूंकि हम जानते हैं कि यह क्या समय है, इसलिए हमें उसके अनुसार जीने की सलाह दी जाती है। विवेकशील लोग वे लोग होते हैं जो समय की स्पष्ट समझ के साथ जीवन को व्यवस्थित करते हैं। ये वे लोग हैं जो *"समय पर वचन बोलना"* जानते हैं (नीतिवचन 15:23) क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आवाज सुनने के लिए स्वयं को अनुशासित किया है (यशायाह 50:4,5)। जब परमेश्वर की सेवा करने की बात आती है तो वे हमेशा तैयार रहते हैं। वे *"समय और असमय तैयार रहते हैं"* (2 तीमुथियुस 4:2)। परमेश्वर उन्हें किसी भी समय बुला सकते हैं क्योंकि वे उस समय की अत्यावश्यकता को जानते हैं जिसमें वे रहते हैं। इसलिए, वे निरंतर तत्परता में अनुशासित जीवन जीते हैं। ये वे लोग हैं जो आशा नहीं छोड़ते हैं और भलाई करने से कभी नहीं थकते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि वे *"उचित समय पर"* प्रतिफल पाएंगे (गलातियों 6:9)। वे ऐसे लोग हैं जो विनम्रता से जीते और चलते हैं, न तो प्रसिद्धि पाने की कोशिश में रहते हैं और न ही अपने अधिकार का दुरुपयोग करते हैं। वे मनुष्य से प्रशंसा प्राप्त करने का प्रयास नहीं करते, क्योंकि वे जानते हैं कि परमेश्वर *"उचित समय"* पर उन्हें ऊँचा उठाएंगे (1 पतरस 5:5,6)। हम अपने जीवन को कैसे व्यवस्थित कर रहे हैं? क्या हम परमेश्वर की घड़ी के अनुसार जीने, समय पर चलने और उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का प्रयास कर रहे हैं या हम बस अनियमित तरीके से जी रहे हैं और काम कर रहे हैं, क्योंकि हम दूसरों को ऐसा करते हुए देखते हैं? आइए हम अपने जीवन को विवेक के साथ व्यवस्थित करें—अपनी प्राथमिकताओं को फिर से व्यवस्थित करें, अपनी समय-सारिणी को बदलें, अपने जीवन को उन समयों और ऋतुओं के अनुसार बदलें, जिनमें से परमेश्वर हमें ले जा रहे हैं।

समय को पहचान पाना, कुछ इस प्रकार है जैसे वर्तमान

परिस्थितियों को देखकर ऋतु या समय का अनुमान लगाना। यीशु ने इस तुलना का उपयोग मत्ती 16 में उसके पीछे आने वाली भीड़ को कड़ी फटकार लगाते हुए किया। लोग बादल की स्थिति और हवा की दिशा देखते हुए ऋतुओं के बारे मे, पूर्वानुमान करने लगते थे, किन्तु वे समय को नहीं पहचान पाये। इस उदाहरण को देखते हुए, हम कुछ टिप्पणियाँ कर सकते हैं जो हमें उन समयों और ऋतुओं को समझने और उनके प्रति उचित प्रतिक्रिया देने मे सहायक होगा जिनमें परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहे हैं। सचेत रहना समय और ऋतुओं को समझने की कुंजी है।

अपने भीतर परमेश्वर की आत्मा की अगुवाई का अवलोकन करें

आपके कार्य करने की प्रक्रिया में, परमेश्वर अपनी योजनाओं और उद्देश्यों को आप पर प्रकट करते हैं। ऐसी प्रबल इच्छाएं, स्वप्न और आशाएँ हैं जिन्हें वह अपनी आत्मा और वचन के द्वारा आप में जन्म देंगे। आप पाएंगे कि आपके अंदर एक ज्वलंत उत्साह पैदा हो रहा है—खोए हुओं तक पहुंचने, उन्हें वचन को सिखाने, एक व्यवसायी बनने आदि के लिए—जो आपके भीतर के मनुष्य में प्रज्वलित हो रहा है। यह आपके साथ परमेश्वर की बातचीत है। परमेश्वर के ऐसे कार्यों के प्रति सचेत और चौकन्ने रहिये।

अपने जीवन की स्थितियों और घटनाओं का अवलोकन करें

आपका समय, आपके जीवन की घटनाएं, परमेश्वर के हाथों में हैं (भजन संहिता 31:15)। चीजें यूं ही नहीं होतीं। इस बात को समझिये कि कई बार परमेश्वर आपके लिए विशिष्ट घटनाओं और परिस्थितियों का आयोजन करते हैं। कुछ ऐसा है जो वह आपके मार्गों में आने वाली इन चीजों के माध्यम से आपको बता रहे हैं। शायद यह परमेश्वर के

किसी दास के साथ या किसी कंपनी के अध्यक्ष के साथ एक दिव्य मुलाकात हो। यह किसी विशेष काम में शामिल होने, किसी विशेष संदेश को सुनने, या किसी मित्र के द्वारा की गई टिप्पणी को सुनने इत्यादि का अवसर भी हो सकता है। परमेश्वर जीवन की साधारण घटनाओं के द्वारा भी आपसे बात कर सकते हैं। यह जानने के लिए संवेदनशील रहें कि वह कब बोलते हैं (और कब नहीं!) और देखें कि वह क्या कह रहे हैं।

अपने अंदर परमेश्वर की आत्मा के बहाव को तत्कालिक घटनाओं से जोड़कर कार्य करें

यदि आप सड़क पर हैं और आप आकाश में काले बादल को छाते हुए देखते हैं और आपको बारिश की खुशबू आने लगती हैं या यहां तक कि बूंदो के गिरने का भी अनुभव होता हैं, तो आप सामान्य रूप से बिना सुरक्षा के खड़े होकर भीगना पसंद नहीं करेंगे। आप अपना छाता बाहर निकालेंगे या किसी छतरी के नीचे छिप जाएंगे। इसी तरह, चूँकि आप आत्मा की अगुवाई और अपने जीवन की स्थितियों के प्रति संवेदनशील हैं, आपको लगातार दोनों को जोड़कर उचित कार्य करने की आवश्यकता है।

जीवन की ऋतुओं के प्रति संवेदनशील रहें

जो लोग दुनिया के उस हिस्सों में रहते हैं जहां तापमान चरम सीमा पर होता है, वे लोग ऋतु के हिसाब से कपड़े पहनने के महत्व को जानते हैं। सर्दियों के दौरान, वे अपने मोटे गर्म कपड़े निकालते हैं और गर्मियों के दौरान, वे हल्के कपड़े पहनते हैं। दूसरे शब्दों में, हम अपने पहनावे के पैटर्न को ऋतु के हिसाब से ढाल लेते हैं। उसी तरह विश्वासियों के रूप में, हमें अपने जीवन को व्यवस्थित करना चाहिए और खुद को जीवन की उस ऋतु के अनुसार संचालित करना चाहिए जिसमें

परमेश्वर हमें ले जा रहे हैं।

परमेश्वर आपको तैयारी की ऋतुओं में से ले जाएंगे

हम सभी समझते हैं कि परमेश्वर हमें उस कार्य के लिए तैयार करते हैं जिसे करने के लिए उन्होंने हमें बुलाया है। हम यह महसूस करने में विफल हो सकते हैं कि आमतौर पर तैयारी के कई काल हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप तैयारी के एक काल से गुजरते हैं जहाँ आप नए कौशल और क्षमताओं को सीखते और विकसित करते हैं। आप मान सकते हैं कि यह पूरा हो जाने के बाद, परमेश्वर आपको उस सपने और योजना को पूरा करने के लिए भेजेंगे जो आपके हृदय में है। आपके लिए यह आश्चर्य की बात हो सकती है कि आपके दर्शन को पूर्ण करने हेतु भेजने की अपेक्षा वह आपको एक और तैयारी की ऋतु में भेज देंगे और आप दूसरी ऋतु में कदम रखते हैं जहां परमेश्वर आपके जीवन के किसी अन्य क्षेत्रों में आपसे बातें करेंगे। शायद, इस ऋतु में, वह आपके हृदय की बातों या मुद्दों को—आपके चरित्र और अनुशासन को—विकसित और सुदृढ़ करने हेतु कार्य करते हैं।

प्रत्येक ऋतु आपको अगले हेतु के लिए तैयार करती है

परमेश्वर आपको जिन विभिन्न ऋतुओं में से ले जाते हैं, वे जीवन की अलग-थलग अवधियाँ नहीं हैं जिनमें से होकर आप चलते हैं और भूल जाते हैं। बल्कि, प्रत्येक ऋतु जीवन की पिछली ऋतु पर आधारित है। जीवन की इस ऋतु में आप जो चीजें सीखते हैं, वे आपको जीवन के अगली या भविष्य की ऋतुओं में आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार करेंगी। इसलिए, जीवन की प्रत्येक ऋतु महत्वपूर्ण है।

ऋतु बदलने पर स्वयं को बदलने के लिए तैयार रहें

जब ऋतु बदलती है और जीवन में बदलाव आते हैं, तो बदलाव

आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए, जीवन की वर्तमान ऋतु में, आप किसी विशेष स्थान पर रह रहे होंगे, आपके कुछ विशेष मित्र होंगे और आप कुछ विशेष गतिविधियों में सम्मिलित होंगे। जब परमेश्वर आपके जीवन की ऋतु को बदलते हैं, तो वह यह भी चाहते हैं कि आप किसी नई जगह पर जाएँ, नए मित्र बनाएँ और बिल्कुल नये प्रकार की गतिविधि में शामिल हों। हालाँकि, आप में से कुछ लोगों को ऐसा करना मुश्किल लग सकता है, क्योंकि आप परिचित लोगों के साथ सहज हैं और अज्ञात लोगों से डरते हैं। आपको अपने वर्तमान से उस भविष्य की ओर बढ़ने के लिए तैयार रहना चाहिए जो परमेश्वर ने आपके लिए रखा है।

दूरदर्शिता रखें और अगली ऋतु की तैयारी करें

कभी-कभी, आप जानते हैं कि आपके जीवन की ऋतु एक निश्चित समय में बदल जाएगी। उदाहरण के लिए, आप अब से कुछ महीने बाद एक एकल व्यक्ति होने से विवाहित व्यक्ति बनने वाले हैं। चूंकि आप जानते हैं कि यह परिवर्तन बहुत दूर के भविष्य में नहीं होने वाला है, इसलिए जितना हो सके इसके लिए योजना बनाएं और तैयारी करें। बदलाव का समय आने पर अनजान न रहें। इस बदलाव को प्रभावित करने वाले सभी मुद्दों पर विचार करें और अच्छी तैयारी करें।

उस ऋतु का आनंद लें जिसमें आप हैं

आपको जीवन की प्रत्येक ऋतु का आनंद लेना सीखना चाहिए। जीवन की कुछ ऋतु, अन्य ऋतुओं की तरह सुखद नहीं होतीं। फिर भी, आपको यात्रा का आनंद लेना सीखना चाहिए क्योंकि प्रत्येक ऋतु का अपना महत्व होता है।

'कैरोस' कब होता है?

जैसा कि पहले उल्लेखित किया गया है, *'कैरोस'* हमारे जीवन में कुछ घटनाओं का एक साथ आना है जो इसे उपयुक्त समय बनाते हैं। व्यक्तिगत बातों में, *'कैरोस'* परमेश्वर से ज्यादा हम पर निर्भर है। उदाहरण के लिए, आप अपना व्यवसाय या अपनी सेवकाई शुरू करने के लिए *'कैरोस'* पल की प्रतीक्षा कर रहे होंगे। एक व्यक्ति जो अपनी सेवकाई आरम्भ करने की प्रतीक्षा कर रहा है, उसके लिए *'कैरोस'* का क्षण तब आएगा जब परमेश्वर देख लेंगे कि यह व्यक्ति तैयार हो चुका है। यह तैयारी इस बात पर निर्भर है कि वह अपने जीवन में परमेश्वर के व्यवहार के प्रति कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। परमेश्वर तब तक प्रतीक्षा करेंगे जब तक कि उसमें वांछित चरित्र, उद्देश्य की पवित्रता, सही दृष्टिकोण और एक सेवक-हृदय विकसित नहीं हो जाता। जब परमेश्वर देख लेते हैं कि ये सब उन लोगों में परिपक्व हो गए हैं, तो उनकी सेवकाई की शुरुवात के लिए *'कैरोस'* क्षण आता है। जब तक आवश्यक होगा, तब तक परमेश्वर प्रतीक्षा करेंगे। परमेश्वर कभी जल्दबाजी में नहीं रहते।

5
समय की पुनर्स्थापना

योएल 2:25
"और जिन वर्षों की उपज टिड्डियों ने खा ली थी, मैं उसकी हानि तुम को भर दूंगा...

भजन संहिता 103:5
वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है,
जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है

2 पतरस 3:8
हे प्रियों, यह एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहां एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर है।

अंत में, हम समय के पुनःस्थापन हेतु कुछ कथन कहेंगे। हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जिसके बारे में बाईबल के अधिकांश विद्वानों का मानना है कि यह पुनःस्थापन का समय है, जिसके बारे में प्रेरितों के काम 3:19-21 में बात की गई है। यह चर्च में पूरा किया जा रहा है क्योंकि इसे महान सामर्थ और महिमा के लिए पुनःस्थापित किया जा रहा है। यदपि, जैसा कि बाईबल में हम देखते हैं, जब भी परमेश्वर पुनःस्थापना करते हैं, तो वह बढ़ता भी है (अय्यूब 42:10)। परमेश्वर जो पुनःस्थापित करते हैं, तो वह मूल से बहुत बड़ा और अधिक अच्छा हो जाता है। यह समय के संदर्भ में भी सच है। समय परमेश्वर को नियंत्रित नहीं करता, बल्कि परमेश्वर समय को नियंत्रित करते हैं। परमेश्वर की घड़ी में, समय उनसे भिन्न चलता है जिसके हम आदि हैं। हम में से कुछ लोगों का जीवन टिड्डियों ने नष्ट कर डाला होगा। यहाँ टिड्डियां बर्बादी, विनाश और निष्फलता का प्रतीक हैं। परमेश्वर

उन वर्षों (समय) को पुनःस्थापित कर सकते हैं जो नष्ट हो गए हैं (चाहें जो भी कारण हो)। वह हमें अपनी आत्मा के द्वारा एक वर्ष में वह पूरा करने में सक्षम बना सकते हैं, जो हम अपने प्रयासों से एक सहस्राब्दी में भी पूरा नहीं कर पाएंगे। हम अपने जीवन में बर्बाद हुए समय को पुनःस्थापित करने के लिए परमेश्वर की ओर देख सकते हैं।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

2000 साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सब ने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" **(रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मरा। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग में चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा " **(रोमियों 10:9)|**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड

चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मर कर और फिर मरे हुओं में से जी उठ कर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं अपने पापों की क्षमा और अपने पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार फैलाने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और पवित्र आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses—Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work—Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

- **किशोरों**
- **व्यक्तिगत समायोजन**
- **सम्बंधपरक चुनौतियां**
- **शिक्षा में कम सफलता पाने वाले कार्य सम्बंधित मुद्दे**
- **परिवार / दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक आत्मिक समस्याएं**
- **माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी**
- **व्यवहार सम्बंधी विकार**
- **व्यक्तित्व विकार**
- **मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
- **तनाव / आघात**
- **शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
- **जिंदगी की सीख**

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में बिना मूल्य के वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और पवित्र आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग करके आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

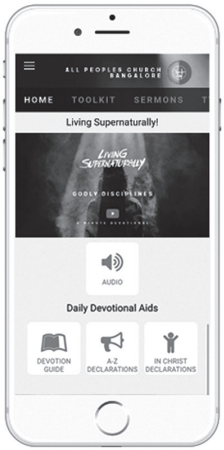

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (Dip.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

क्या आपने रुक कर कभी इस सच्चाई का विचार किया है कि परमेश्वर के पास एक घड़ी है जो संसार की आधारशिला रखने के समय से या फिर अनंतकाल के अज्ञात समय से अब तक चल रही है? क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर के पास हम सभी के जीवन के लिए एक घड़ी है? क्या आपने कभी अपने जीवन को न केवल अपनी कलाई पर पहनी हुई घड़ी के अनुसार या दीवार पर लगी हुई घड़ी के अनुसार, या परमेश्वर की घड़ी के अनुसार ढालना चाहा है या ढालनें का प्रयास किया है ? आपके लिए यह कितना महत्वपूर्ण है कि आप परमेश्वर के समय के अनुसार काम करें और आप वही करें जो वह चाहते हैं, चाहे वह आप जीवन के किसी भी समय पर करें? और यह आपके लिए कितना महत्वपूर्ण है कि आप अपने जीवन के निश्चित किये गए समय में वही बनें जो वह चाहते हैं?

ये चुनौतीपूर्ण प्रश्न हैं, और वास्तव में यह महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर की घड़ी के अनुसार अपने जीवन को जानना और व्यवस्थित करना सीखें। यह पुस्तक व्यक्तिगत रूप से हमारे लिए परमेश्वर के समय को पहचानने में और समझने में सहायता करेगी।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org